प्रथम अध्याय

"कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1·1 प्रास्ताविक

1·2 कमलेश्वर का जन्म-स्थान तथा उनका जीवन परिचय

1·3 कमलेश्वर का बचपन

1·4 कमलेश्वर की शिक्षा

1·5 कमलेश्वर के माता-पिता

1·6 कमलेश्वर की नौकरियाँ

1·7 कहानीकार कमलेश्वर

1·8 सम्पादक कमलेश्वर

1·9 कहानी आलोचक कमलेश्वर

1·10 उपन्यासकार कमलेश्वर

1·11 कमलेश्वर और उनकी फिल्मे

1·12 टेलिविजन और कमलेश्वर

1·13 निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

कमलेश्वर व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1·1 प्रास्ताविक

स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी साहित्य जगत् के प्रमुख साहित्यकारों में कमलेश्वर का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। आज जितने भी हिन्दी प्रेमी हैं वे सब कमलेश्वर को अच्छी तरह से पहचानते हैं। कमलेश्वर एक सफल कहानीकार हैं और उपन्यासकार भी। उन्होंने उपन्यास और कहानियाँ लिखकर आज के साहित्य को नई दिशाएँ प्रदान की। उनके उपन्यास और कहानियों का तत्कालीन समाज पर बहुत ही गहरा असर हुआ है। खासतौर से देखा जाय तो हिन्दी जगत् उनको एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में देखता है। हिन्दी कहानी को एक नया मोड़ देने का महत्त्वपूर्ण प्रयास कमलेश्वर ने किया है। नई कहानी के आंदोलन को सफल बनाने में भी उनका योगदान रहा है। कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में कमलेश्वर ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

1·2 कमलेश्वर का जन्म-स्थान तथा उनका जीवन परिचय :-

कमलेश्वरजी का जन्म 6 जनवरी 1932 को कटरा, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। कमलेश्वर का पूरा नाम है - कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना। कभी-कभी वे अन्य कई उपनामों से भी लिखते रहें। कभी विप्र गोस्वामी, तो कभी हरिश्चंद्र, कभी सौमित्र गोस्वामी तो कभी प्र्यर्यवेक्षक। लेकिन आखिर हिन्दी संसार उन्हें "कमलेश्वर" के नाम से ही जानता है।

1·3 कमलेश्वर का बचपन :-

कमलेश्वर को बचपन से ही अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ा। वे जब चौथे दर्जे में पढ़ते थे तब उनके बाबूजी का दिल का दौरा पढ़ने से देहान्त हुआ। बचपन में ही उनके बाबूजी चल बसने के कारण बाबूजी का चेहरा भी उन्हें ठीक तरह से याद नहीं रहा। पिताजी की मृत्यू के बाद उनका एक मात्र सहारा था - बडा भाई सिद्धार्थ। लेकिन उसकी भी अचानक मृत्यू हो गयी तो कमलेश्वर पर मानों पहाड़ ही टूट पड़ा।

बचपन की पढ़ाई के वक्त उन्हें जो भी दिक्कतें आयीं, उनका उन्हें बुरी तरह से सामना करना पड़ा। पढ़ाई में उन्हें दिलचस्पी थी, किन्तु मास्टर ने ही उन्हें बार-बार कटुक्तियाँ वकते हुए नाउम्मीद बनाया। अपनी पढ़ाई के लिए वे कभी किताब तक खरीद न सके।

उनके शब्दों में "जो बीत गया था, बहुत गौरवपूर्ण, गरिमामय और महान था। जो आनेवाला था, वह बहुत खुशनुमा और आरामदेह होगा क्योंकि सिद्धार्थ बहुत होनहार थे।····तभी सिद्धार्थ की मृत्यू हो गयी।···और अमीर कहे जानेवाले घर में गरीब की तरह रहना, खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट भरे दुखों के बीच हँस सकना, बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह निर्णय ले सकना मेरी मजबुरी बन गयी थी।"[1]

1·4 कमलेश्वर की शिक्षा :-

कमलेश्वर की प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी हायस्कूल तथा गवर्नमेंट हायस्कूल मैनपुरी में संपन्न हुयी। उन्होंने सन 1950 में के·पी·की परीक्षा पास की। इसके बाद उन्होंने 1954 में इलाहाबाद विश्व विद्यालय से एम·ए·की परीक्षा पास की। उनकी हिन्दी के अलावा भौतिक, रसायनशास्त्र, गणित, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि कई विषयों में दिलचस्पी का परिचय भी मिलता है।

आगे प्रयाग विश्व विद्यालय से हिन्दी विषय में एम.ए.की उपाधि प्राप्त कर लेखन के क्षेत्र में पदार्पण किया। तब से लेकर वे आजतक इसी कार्य में डूबे हुए नज़र आते हैं।

1·5 **कमलेश्वर के माता-पिता :-**

जब कमलेश्वर चौथी कक्षा में थे तब उनके "बाबूजी" का दिल का दौरा पड़ने से देहान्त हुआ। पिताजी की मृत्यु के बाद घर की हालत तो दिन-ब-दिन गिरती ही जा रही थी। उनके शब्दों में, "वह लड़ाई का जमाना था। सामंती घर बुरी तरह ढह चुका था। नौकर-चाकर बिदा हो चुके थे। गाय-भैंस जिंदा रह सके, इसलिए उन्हें गाँव भेज दिया गया था। पर हम जिन्दा रह सकें, इसका कोई तरीका नज़र नहीं आ रहा था। माँ रात ढाई-तीन बजे उठकर हाथों में कपडा लपेट-लपेट कर चक्की से आटा पीसती, बरतन धोती और सुबह होते-होते पुराने जमींदार घराने की हो जाती। गरीब और टुटे हुए मुहछेवालों के घावों पर मरहम लगाती और रात को सूने कमरे में बैठकर चुपचाप रोया करती।"[2]

1·6 **कमलेश्वर की नौकरियाँ :-**

कमलेश्वर ने छोटी-मोटी कई प्रकार की नौकरियाँ की। उन्होंने प्रकाश-प्रेस, मैनपुरी में प्रूफरीडिंग के साथ-साथ स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में लेखन का काम भी जारी रखा। उसके बाद "जनक्रांति" §कानपुर-इलाहाबाद§ में अवैतनिक कार्य और विधिवत लेखन भी किया और वैज्ञानिक मार्क्सवाद से परिचय की भूमिका की तैयारी की। तदुपरान्त उन्होंने "बहार" मासिक §इलाहाबाद§ में पचास रू.माहवार पर सम्पादन कार्य किया। शहनाज आर्ट साईनबोर्ड पेंटर्स §इलाहाबाद§ में साईनबोर्ड पेंटिंग का काम अनियमित तनख्वाह पर किया। राजा आर्ट §इलाहाबाद§ में ही कागज के डिब्बों आदि की डिजाइनों तैयार करने का ड्राईंग का काम भी अनियमित वेतन पर किया। कोई भी छोटा-मोटा काम करने में वे कभी हिचकिचाये नहीं। उन्होंने ब्रुकबाण्ड चाय के गोदाम में दूसरा नाम बदलकर चौकीदारी की नौकरी भी की। "कहानी" मासिक §इलाहाबाद§ में ही

एक सौ रूपये माहवार पर नौकरी की। राजकमल प्रकाशन §इलाहाबाद§ में साहित्य-सम्पादक के रूप में डेढ-सौ रू॰माहवार पर भी काम किया। उसके बाद सेंट जोसेफस् सेमिनरी §इलाहाबाद§ में भारतीय तथा विदेशी केथालिक ब्रदर्स के लिए हिन्दी अध्यापन एक सौ पच्चीस रूपये माहवार पर काम किया। उन्होंने श्रमजीवी प्रकाशन की शुरूआत की। लेकिन 32 हजार का कर्जा चढ़ जाने के कारण सबकुछ ठप्प हो गया। अन्य प्रकाशकों की पुस्तके सप्लाई करके पैसा न पा सकने के कारण सब कुछ ठप्प हो गया। उन्होंने ऑल इंडिया रेडिओ §इलाहाबाद§ में स्क्रिप्ट रायटिंग के साथ-साथ टेलिविजन में भी स्क्रिप्ट रायटिंग किया।

कहानी मासिक सम्पादन के साथ नई कहानियों का दिल्ली में सम्पादन किया। "इंगित" साप्ताहिक का सम्पादन भी दिल्ली में ही किया तथा "सारिका" के सम्पादन का भी काम किया।

इसके अतिरिक्त कमलेश्वर ने अन्य कार्य भी किये हैं। कमलेश्वर ने आकाशवाणी के लगभग सौ स्क्रिप्टस् का लेखन किया और टेलिविजन के लिए लगभग ढाई सौ स्क्रिप्टस् का लेखन भी किया। उनकी और एक साहित्यिक उपलब्धि यह है कि टेलिविजन पर पत्रिका की शुरूआत। उसके साथ-ही-साथ आकाशवाणी तथा टेलिविजन पर रनिंग-कॉमेंट्री का उन्होंने प्रस्तुतीकरण किया है।

भारतीय टेलिविजन के लिए पहली फिल्म "पंद्रह अगस्त" का निर्माण किया। हिन्दू-मुस्लिम दोनों जातियों में भिवंडी §महाराष्ट्र§ में जो संघर्ष छिड़ गया, उस पर टेलिविजन के लिए उन्होंने फिल्म का निर्माण किया। स्वतंत्र पार्टी के विरोध में राजस्थान में चुनावों के दौरान प्रगतिशील उम्मीदवारों के लिए प्रचार का कार्य किया।

1·7 कहानीकार कमलेश्वर :-

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों में कमलेश्वर सर्वथा अग्रणी रहे हैं। एक ऊँचे दर्जे के कहानीकार की हैसियत से ही उन्हें हिन्दी साहित्य जगत् में विशेष

ख्याति प्राप्त हो चुकी है। वैसे देखा जाय तो कमलेश्वर मूलतः कहानीकार हैं, बाद में सब कुछ। हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में उनका अनूठा योगदान रहा है। नई कहानी आंदोलन के दौर में अनेक लेखक उखड़ गये, मगर कमलेश्वर अपने स्थान पर अभी तक बराबर जम गये हैं।

उनकी सबसे पहली कहानी "कामरेड" जो एटा के "अप्सरा" पत्रिका में प्रकाशित हुई है। मगर यह कहानी उनके किसी भी कहानी संग्रह में नहीं है।

कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ निम्नलिखित हैं। राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, गरमियों के दिन, बयान, मांस का दरिया, नीली झील, बदनाम बस्ती, साँप, लाश, जोखिम रातें, दिल्ली में एक मौत, इतने अच्छे दिन आदि।

इनमें से उनके प्रमुख कहानी संग्रह इस प्रकार हैं -

1· राजा निरबंसिया
2· कस्बे का आदमी
3· खोई हुई दिशाएँ
4· मांस का दरिया
5· जिन्दा मुर्दे
6· बयान
7· मेरी प्रिय कहानियाँ
8· कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

इसके अलावा अन्य छोटी-मोटी पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कुछ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। "मांस का दरिया" में कमलेश्वर कहते हैं - "कला के स्तर पर कहानी मेरे लिए एक बहुत कठिन विधा है। हर कहानी एक चुनौती बनकर सामने आती है और उसके सब सूत्रों को संभालने में नसें फटने लगती हैं - यह कठिन परीक्षा का समय होता है।"[3]

1·8 **सम्पादक कमलेश्वर :-**

"कहानी" मासिक पत्रिका से लेकर "सारिका" तक कमलेश्वर की एक लम्बी कहानी यात्रा पायी जाती है। "संकेत" पत्रिका के भी वे सहयोगी सम्पादक रहे हैं। दिल्ली से प्रकाशित होनेवाली "इंगित" पत्रिका के भी वे सम्पादक रहे हैं। वैसे देखा जाय तो कमलेश्वर प्रमुख रूप से दो पत्रिकाओं - "नई कहानियाँ" और "सारिका" के सम्पादक बने रहे। कमलेश्वर ने "नई कहानियाँ" का सम्पादन 1963 से 1965 तक किया। 1976 के मार्च महीने में उन्होंने "सारिका" का सम्पादकत्त्व स्वीकार किया। और तब से लेकर 1978 तक वे "सारिका" के सम्पादक बने रहें। उन्होंने 1977 से "सारिका" को "समयगत सच्चाइयों जनसाहित्य की समांतर पाक्षिकी" बना दिया। "सारिका" ने भारतीय कहानीकारों को विश्व की कहानियों से भी परिचित कराया।

इसके अलावा कमलेश्वर ने "सारिका" के कुछ खास विशेषांक निकालकर कहानी के क्षेत्र में ठोस कार्य किया है। "सारिका" के माध्यम से कमलेश्वर ने नये स्तंभो की शुरूआत कर अपने सम्पादकीय व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

1·9 **कहानी आलोचक कमलेश्वर :-**

एक आलोचक के रूप में भी कमलेश्वर का नाम चर्चित रहा है। वे मुख्य रूप से नई कहानी के आलोचक माने जाते हैं। "नई कहानी की भूमिका" नामक अपनी पुस्तक में उन्होंने नई कहानी के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नई कहानी का अस्तित्व, नई कहानी और आधुनिकता, नई कहानी का रूपबंध आदि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का "नई कहानी की भूमिका" में चर्चा की गयी है। उनकी "नई कहानी की भूमिका" पुस्तक नई कहानी की पहचान में महत्त्वपूर्ण योग देती है।

कमलेश्वर ने सारिका में समान्तर और मेरा पन्ना के माध्यम से अपने अनूठे व्यक्तित्व का परिचय दिया है। यह अपने आप में बड़ी अहम बात है। वास्तव में कमलेश्वर हिन्दी साहित्य जगत् के एक विवादास्पद और अत्यंत चर्चित

साहित्यकार रहे हैं। लघु उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक और सम्पादक के रूप में हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर ने अपनी अलग इमेज बनायी है।

1·10 **उपन्यासकार कमलेश्वर :-**

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य जगत् में कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। उनके उपन्यासों का और समाज का बड़ा गहरा सम्बन्ध रहा है। कमलेश्वर ने एक निश्चित वर्ग को केन्द्र मानकर उपन्यास लिखे हैं। उनके उपन्यास तत्कालीन समाज का आईना बनकर सामने आते हैं।

राजेन्द्र यादव ने उनके बारे में लिखा है··· "कमलेश्वर स्वयं सच नही बोलते मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी के बारे में सच जरूर बोलते हैं। उनके पास जबान है और उन्हें ठीक तरह से बात करने के लिए भी आती है। क्योंकि इनके सामने बडे-बड़े जबानदार लोग भी चुप बैठते हैं।"[4]

कमलेश्वर के अब तक कुल सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जिनकी सूची इस प्रकार है -

1· एक सड़क सत्तावन गलियाँ (बदनाम गली)
2· डाक बंगला
3· तीसरा आदमी
4· समुद्र में खोया हुआ आदमी
5· लौटे हुए मुसाफिर
6· काली आँधी
7· आगामी अतीत

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "हंस" में, "समुद्र में खोया हुआ आदमी" और "काली आँधी", "साप्ताहिक हिन्दुस्थान" में तथा "आगामी अतीत", "धर्मयुग" में छपे थे। चार उपन्यासों पर फिल्में बन चुकी हैं - बदनाम बस्ती, डाक बंगला, आँधी और मौसम, जो क्रमशः "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला",

"काली आँधी" और "आगामी अतीत" उपन्यासों पर आधारीत हैं।

कमलेश्वर का सबसे पहला उपन्यास "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" प्रकाशक की भूल के कारण "बदनाम गली" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। लेकिन उनका यह प्रथम प्रयास ही इतना सफल है कि आज भी यह उपन्यास ताजा लगता है। ऐसा लगता ही नहीं कि वह वर्षों पहले लिखा गया है। "वही बात" उपन्यास "रविवार" पत्रिका कलकत्ता से धारावाहिक के रूप में प्रकाशित है। "सुबह, दोपहर और शाम" धारावाहिक के रूप में यह भी उपन्यास "साप्ताहिक" हिन्दुस्थान" में प्रकाशित है।

1·11 कमलेश्वर और उनकी फिल्में :-

आजकल फिल्मी दुनिया में जिनका नाम तेजी से उभार रहा है वे हैं कमलेश्वरजी। सबसे पहले तो वे साहित्यकार हैं और बाद में फिल्मकार। कमलेश्वर के कुछ उपन्यासों पर सफल फिल्में भी बनी हैं।

"आज हिन्दी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य नाम होने के साथ-साथ एक निश्चित शक्ति भी है।"[5]

कमलेश्वर अविरत रूप से लिखते हुए सही फिल्मों की तलाश में जुट गये हैं। आज के आधुनिक युग में भी कमलेश्वर की फिल्मों के बहुत चर्चे हो रहे हैं।

उनकी फिल्में इस प्रकार हैं - "बदनाम बस्ती", "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास पर आधारित है और इसके निर्देशक प्रेमकपूर है। "फिर भी", "तलाश" कहानी पर आधारित कहानी, पटकथा, संवाद लेखन कमलेश्वरने किया है। इसके निर्देशक शिवेन्द्र सिन्हा है। "अमानुष" फिल्म का संवाद लेखन कमलेश्वर ने किया है। और इस फिल्म के निर्देशक शक्ति सामन्त हैं। "आँधी" यह फिल्म उनके "काली आँधी" उपन्यास पर आधारित है। और इसके निर्देशक हैं गुलजार। "आगामी अतीत" उपन्यास पर आधारित "मौसम" फिल्म है और इसके निर्देशक

गुलजार हैं। "घडी के दो हाथ" फिल्म की पटकथा और संवाद लेखन कमलेश्वरजी ने किया है। और निर्देशक है बी·आर·चोपडा। "तुम्हारी कसम" फिल्म की पटकथा और संवाद लेखन भी कमलेश्वर ने ही किया है। और निर्देशक रवि चोपडा हैं। "राम-बलराम" फिल्म का संवाद लेखन और पटकथा कमलेश्वर ने लिखी है। और इसके निर्देशक विजय आनंद हैं।

1·12 **टेलिविजन और कमलेश्वर :-**

कमलेश्वर और टेलिविजन का घनिष्ठ संबंध रहा है। कुछ बरसों पहले कमलेश्वर ने दूरदर्शन के लिए एक नया प्रोग्राम शुरू किया था "परिक्रमा"। "परिक्रमा" के माध्यम से कमलेश्वर ने सामाजिक यथार्थ को, सुख-दुख को, आशा-निराशा को बेखुबी चित्रित किया है। इस प्रोग्राम के अंतर्गत उन्होंने पढे-लिखे और अनपढ़ सभी प्रकार के लोगों के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। वे उनसे तीखे सवाल करते थे। और सच्चाई सामने आती थी। प्रोफेसर, लेखक, विद्वान, आलोचक, शिक्षक, डॉक्टर, साहित्यकार, कवि और शायर आदि लोगों की जिन्दगियों को प्रस्तुत किया। प्रोग्राम से पहले वे भूमिका पेश करते जो बड़ी ही प्रभावपूर्ण रहती थी। मामूली आदमी का भी इंटरव्युह वे इस ढंग से ले लेते कि देखनेवाले और सुननेवाले अचरज में पड़ जाते थे।

दूरदर्शन के लिए उनका नया प्रोग्राम रहा "दृष्टिकोन"। अयोध्या से जुड़ा यह प्रोग्राम भी लोगों ने बेहद पसन्द किया। इसके सिवा कमलेश्वर भी समय-समय पर दूरदर्शन के प्रोग्राम के लिए याद किये जाते हैं।

1·13 **निष्कर्ष :-**

सारांश यही कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर और उनके साहित्य का विशिष्ठ योगदान रहा है। उनका प्रारंभिक जीवन यातनाओं से भरा हुआ नज़र आता है। पर उनमें कुछ सीखने की बड़ी गहरी ललक थी। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए कमलेश्वर ने क्या क्या मुसीबतें नही झेली ? छोटी-मोटी अनेक प्रकार

की नौकरियाँ करते हुए उन्होंने अपना उत्साह कायम रखा। उनका साहित्य से पहले से ही लगाव था। एक कहानीकार के रूप में हिन्दी संसार तो उनको जानता ही है, पर एक उपन्यासकार के रूप में भी जानता है। कहानी और उपन्यास इन दोनों विधाओं में उन्होंने वाकई बड़ा कमाल सिखाया है।

एक सम्पादक के रूप में भी उनकी ख्याति विशेष रही है। "सारिका" पत्रिका के सम्पादक कमलेश्वर ने सारिका के माध्यम से नये कहानीकारों को उभरने का मौका दिया। नई कहानी आन्दोलन को भी उन्होंने सफल बनाया। "सारिका" में "मेरा पन्ना" स्तंभ के अंतर्गत कमलेश्वर का बयान विशिष्ठ ढंग का रहा है। कमलेश्वर जहाँ एक सफल सम्पादक रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर वे सफल आलोचक भी रहे हैं। उन्होंने नई कहानी की भूमिका भी लिखी है। दूरदर्शन पर "परिक्रमा" का प्रसारण आम-आदमी की जिन्दगी का आईना रहा है। आज भी समय-समय पर दूरदर्शन से महत्त्वपूर्ण एवं गंभीर प्रसंगों का निवेदन करते रहते हैं। हाल ही में उन्होंने दूरदर्शन के अंतर्गत बडी महत्त्वपूर्ण बाते लोगों के सामने रखी है।

कमलेश्वर ने फिल्मों के लिए भी लेखन किया है। वैसे उनके कई उपन्यासों पर जो फिल्में बनी हैं, वो काफी चर्चित रही और लोगों ने उन्हें पसन्द ही किया है। संक्षेप में बस इतना ही है कि कमलेश्वर के व्यक्तित्व के कई आयाम स्पष्ट होकर सामने आते हैं। वे एक बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार रहे।

संदर्भ सूची

1· आईने के सामने / कमलेश्वर / पृ·92

2· आईने के सामने / कमलेश्वर / पृ·98

3· कमलेश्वर / सम्पादक - मधुकर सिंह / पृ·6

4· कमलेश्वर / श्रेष्ठ कहानियाँ - सं·राजेन्द्र यादव

5· कमलेश्वर / सम्पादक / मधुकर सिंह / पृ·344